कहानी अमूर्त चिन्हों की

आमोद कारखानीस

चित्र: संध्या राव

सन् 2010 का ग्रीष्म बीत चुका था और ठण्ड के मौसम की शुरुआत हो रही थी लेकिन अभी अपने चरम पर नहीं पहुँची थी, फ्रांस में सुहावना मौसम चल रहा था। सुबह के समय एक युवती गाँव के एक रेस्टोरेंट में बैठकर किसी का इन्तज़ार कर रही थी। उसके सामने कॉफी और यूरोप का मशहूर कोसांट और जैम रखा हुआ था, लेकिन उसकी रुचि नाश्ते में कम ही थी। वो बेसब्री से किसी की प्रतीक्षा कर रही थी।

थोड़ी ही देर में एक सज्जन वहाँ तशरीफ लाए। कठोर चेहरा, बढ़ी हुई दाढ़ी, मज़बूत कद-काठी, मोटे खाकी कपड़े, गम बूट, उम्र शायद चालीस पार होगी।

"माफ करें, मिस जेनवी। मुझे आने में कुछ देर हुई। दरअसल, मैं कल की तैयारी कर रहा था। आपका सन्देशा मिला और मालूम हुआ कि आप भी हमारे साथ चलने की इच्छुक हैं।"

"लेकिन इस बात का खयाल रखिए कि वहाँ तक जाना काफी मेहनत भरा काम है, जोखिम भरा भी है। आप हमारे साथ चलना चाहती हैं तो ज़रूर चलिए। फिर भी मुझे लगता

है कि आप अपने फैसले पर एक बार अच्छी तरह से सोच लीजिए।"

"हाँ, एक बात और, आप इस मिशन पर हमारे साथ अपनी इच्छा से आ रही हैं। इसलिए किसी भी आकस्मिक घटना की ज़िम्मेदारी हमारी नहीं होगी।"

जेनवी वॉन पेटज़िंगर (Genevieve Von Petzinger) उस समय कनाडा की विक्टोरिया यूनिवर्सिटी में पुरातत्व विज्ञान में एम.ए. कर रही थीं। आदिम मानव गुफाओं में बने चित्र, उनकी रिसर्च का विषय था। फ्रांस की किसी एक गुफा के कुछ चित्रों का अध्ययन करके भी उन्हें उपाधि मिल सकती थी लेकिन वे ठहरीं मेहनती रिसर्चर। उनकी जिज्ञासाएँ उन्हें शान्त नहीं बैठने दे रही थीं, इसलिए उन्होंने तय किया कि वे खुद उन जगहों का दौरा करेंगी।

एक रोमांचक खोज यात्रा

दूसरे दिन जेनवी और टीम के अन्य सदस्य सुबह-सुबह इस खोजी यात्रा पर रवाना हुए। आज उन्हें पहाड़ की ढलान पर मौजूद एक गुफा तक पहुँचना था। कल ही टीम के कुछ लोगों ने इस गुफा तक पहुँचने के लिए एक कच्चा रास्ता बना लिया था। उस समय जब उत्सुकतावश गुफा के भीतर झाँककर देखा था तो कुछ खास नज़र नहीं आया था। लेकिन आज वे लोग पूरी तैयारी के साथ आए थे। रस्सियाँ थीं, इमरजेंसी लाइट थी, ट्रेकिंग के जूते थे, कैमरा था, ज़रूरत पड़ने पर ऑक्सीजन और अन्य उपकरणों की व्यवस्था भी थी।

गुफा वैसे तो बहुत बड़ी नहीं थी। फ्रांस में खोजी गई अन्य गुफाओं की तरह ही लग रही थी। गुफा अन्दर से बड़ी हो सकती है, ऐसा कयास

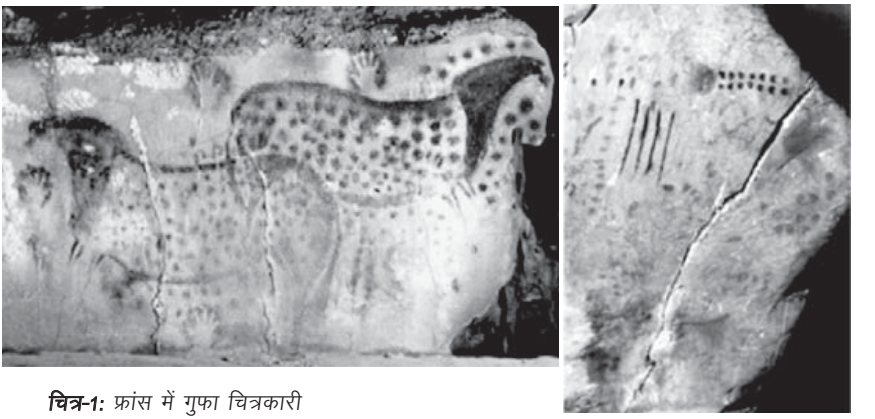

चित्र-1: *फ्रांस में गुफा चित्रकारी*

हमारे देश में मध्यप्रदेश के भीमबेटका और बहुत सारी अन्य जगहों पर ऐसे चित्र खोजे गए हैं। इनके साथ ही, पत्थरों के हथियार-औज़ार और सजीवों के अवशेष भी मिले हैं। इन सब की मदद से हम उस समय के इन्सान के जीवन के बारे में कुछ-कुछ अन्दाज़ा लगा सकते हैं। ये चित्र क्यों बनाए गए होंगे, यह यकीनी तौर पर बता पाना तो मुश्किल है लेकिन पुरातत्व विशेषज्ञों ने अपने-अपने विचार प्रकट किए हैं। कई चित्रों में जीवों की विविध भाव-भंगिमाओं का चित्रण और चित्र बनाने में गतिशीलता को देखते हुए, यकीन हो जाता है कि सम्भवत: ये चित्रण काफी सोच-विचार कर किए गए होंगे।

चित्र-2: *भारत में भीमबेटका शैलाश्रयों में दक्षिण एशिया की कुछ सबसे पुरानी शैल कलाकृतियाँ हैं, जिनका इतिहास पुरापाषाण काल (लगभग 10,000 ईसा पूर्व) का है। लेकिन कुछ आकृतियाँ हाल ही के मध्यकालीन काल की भी हैं।*

लगाया जा रहा था। गुफा की छत गिरने की वजह से भीतर तक जाने का रास्ता बन्द हो गया था। सामने मिट्टी और पत्थरों का ढेर दिख रहा था लेकिन किनारों की तरफ से थोड़ा-सा रास्ता दिखाई दे रहा था।

किनारों के इस सँकरे रास्ते से, किसी तरह जगह बनाते हुए भीतर जाना चाहिए, सभी के मन में ऐसा विचार था। धीरे-धीरे फावड़े से मिट्टी, पत्थर और मलबे को एक तरफ करते हुए लोग अन्दर जाने लगे। लगभग 400 फीट भीतर जाने के बाद वे लोग मुख्य गुफा तक पहुँच सके। यहाँ काफी खुली जगह थी, टॉर्च की रोशनी में गुफा का कोना-कोना बारीकी-से देखा जा सकता था। गुफा की दीवार पर लाल और काले रंग की कुछ आकृतियाँ बनी हुई थीं। कुछ आकृतियाँ धुँधली होने के बाद भी साफ-साफ देखी जा सकती थीं। इन आकृतियों में हिरण और भैंसे जैसे दिखने वाले जीवों के बहुत-से चित्र थे। इनमें से कुछ प्राणियों के शरीर पर गोल बिन्दु बने थे तो कुछ के शरीर पर भाले जैसा कुछ बनाया गया था। सम्भवतः ये शिकार प्रदर्शित करते हुए चित्र हो सकते हैं। टीम के सभी लोग फोटो खींचने और नमूने इकट्ठे करने जैसे कामों में मगन हो गए थे। ये सभी जानकारियाँ पुरातत्व विज्ञान के नज़रिए से काफी महत्वपूर्ण थीं। ऐसी जानकारियों के आधार पर

ही उस दौर के इन्सान की ज़िन्दगी पर रोशनी डाल पाना मुमकिन था।

यह सब देखकर भी जेनवी सन्तुष्ट नहीं हुईं। इससे पहले भी फ्रांस और स्पेन की कुछ गुफाओं में इस तरह के चित्र खोजे जा चुके थे। जेनवी ने इन सबके बारे में सोचना शुरू कर दिया था। यह गुफा किसी समय काफी बड़ी होगी, शायद 100 से 150 लोग आसानी-से यहाँ रह सकते थे। बाद में, कभी यहाँ की छत गिर गई होगी। 'इस गुफा का चप्पा-चप्पा अच्छी तरह देख लेना चाहिए', ऐसा ही कुछ सोचती हुई जेनवी गुफा की दीवार पर बने चित्रों के फोटो लेते हुए आगे बढ़ रही थीं। एक मौका ऐसा भी आया जब सँकरे रास्ते में खड़े रहना भी मुमकिन नहीं था, तब वो रेंगते हुए आगे बढ़ती रहीं, दीवार पर बने चित्रों के फोटोग्राफ लेते हुए।

सिर्फ कुछ जीवों के चित्रों के अध्ययन से जेनवी सन्तुष्ट होने वाली नहीं थीं, इसलिए वे गुफा के और भीतर जा रही थीं। साथ ही, फोटो भी खींचती जा रही थीं। अब उन्हें यह एहसास हो रहा था कि मुख्य गुफा में काफी अन्दर की तरफ जो चित्र बने हैं, उनमें कुछ फर्क हैं। कई चित्रों पर कुछ विशेष चिन्ह बने हुए थे, इन चिन्हों का क्या मतलब हो सकता है, ऐसे खयाल और सवाल उनके मन में आने लगे थे। गुफा के भीतर इन सब पर सोच-विचार करते बैठने का यह उचित समय नहीं था, बल्कि ज़्यादा-से-ज़्यादा फोटो खींचकर जल्दी वापिस लौटना ज़रूरी था।

रेखाओं में रहस्य

इस सफर के बाद जेनवी ने इन सभी फोटोग्राफ का सिलसिलेवार अध्ययन शुरू किया। इन चित्रों का कुछ अर्थ निकाला जाना चाहिए, ऐसा उन्हें महसूस हो रहा था। गुफा चित्र का नाम लेते ही हम सबका ध्यान अक्सर जीवों की आकृतियों पर जाता है। हमारी आँखों के सामने घोड़ा, हिरण, हाथी, भैंसा और उनका शिकार करने वाले इन्सान की आकृतियाँ ही नमुदार होती हैं।

चित्र-3: *उत्तरी स्पेन में एल कैस्टिलो के भित्तिचित्रों में चिन्ह*

चित्र-4: *भित्तिचित्र में चिन्ह, सांताक्रूज़ प्रोविंस, अर्जेंटीना*

दुनियाभर की गुफाओं या शैलाश्रयों में इसी प्रकार के चित्र खोजे गए हैं। इनमें से सबसे पुराने चित्र लगभग 60 हज़ार साल पुराने हैं और कुछ चित्र 30 से 15 हज़ार साल पुराने होंगे, और कुछ केवल डेढ़-दो हज़ार साल पुराने ही।

जेनवी जिस गुफा के भीतर गई थीं, उसमें भी इसी तरह के चित्र थे। लेकिन इन चित्रों के साथ कुछ और भी चिन्ह और निशान थे। ज़्यादातर शोधकर्ताओं ने इन चिन्हों या निशानों को खास महत्व नहीं दिया था। उनका मानना था कि चित्र बनाते समय सजावट के तौर पर पंजों के निशान या ऐसे ही कुछ निशान बनाए गए होंगे। और कहीं रंगों की टूटी रेखाओं का रंग उड़ गया होगा, ऐसा मानकर इन चिन्हों को अनदेखा कर दिया गया।

जेनवी को ऐसा महसूस हो रहा था कि हो-न-हो, ये जानबूझकर बनाए गए निशान हैं। यदि ये निशान हैं तो इनका कोई अर्थ भी होना चाहिए। एक खास बात जिसे जेनवी ने नोट किया था कि कहीं ये निशान या चिन्ह प्राणियों के चित्रों के साथ थे, तो कहीं गुफा के भीतर ऐसी किसी जगह में थे जहाँ प्राणियों के चित्र बेहद कम थे। वहाँ ये निशान बहुतायत में पाए जाते थे।

जेनवी ने फ्रांस की विभिन्न गुफाओं में जहाँ-जहाँ चित्र मिले थे, उन चित्रों को इकट्ठा करके, उनका अध्ययन शुरू किया। फ्रांस में ऐसी 121 गुफाएँ हैं। इनमें लाल, काले और सफेद रंग से बनाए गए चित्र पाए जाते हैं। ज़्यादातर में एकजैसे ही निशान या चिन्ह दिखाई दे रहे थे। जल्द ही जेनवी की समझ में आ गया कि ये निशान महज़ आड़ी-खड़ी लकीरें नहीं हैं, इनमें से ज़्यादातर का सम्बन्ध रेखागणितीय आकारों से है। चौकोन, त्रिकोण, आड़ी लाइन, गुणा का चिन्ह, हैश का चिन्ह, ऐसे ही कुछ विशेष स्वरूप वाले अन्य चिन्ह। यह सजावट के लिए किया गया रेखांकन तो कतई महसूस नहीं हो रहा था।

फ्रांस की ही तरह, यूरोप में स्पेन की कुछ गुफाओं में भी ऐसे ही गुफा-चित्र मिले हैं। इन गुफाओं के फोटोग्राफ का अध्ययन करते हुए लगभग ऐसे ही चिन्ह वहाँ भी दिखाई देने लगे।

जेनवी सोचने लगीं कि चिन्हों की यह परम्परा सिर्फ यूरोप तक सीमित है या दुनिया के अन्य गुफा-चित्रों में भी ऐसा ही कुछ पाया जाता है। क्यों न दुनिया के अन्य गुफा चित्रों का भी अध्ययन किया जाए।

इस सिलसिले में जेनवी ने दुनिया के विभिन्न हिस्सों से बहुत सारे गुफा-चित्रों की तस्वीरें इकट्ठी कीं। ज़्यादातर जगहों पर इन्सान और प्राणियों के चित्र उपलब्ध थे। उसने पाया कि ज़्यादातर फोटोग्राफ में चित्रों के आसपास के अन्य चिन्हों को अनदेखा किया गया था। जेनवी ने

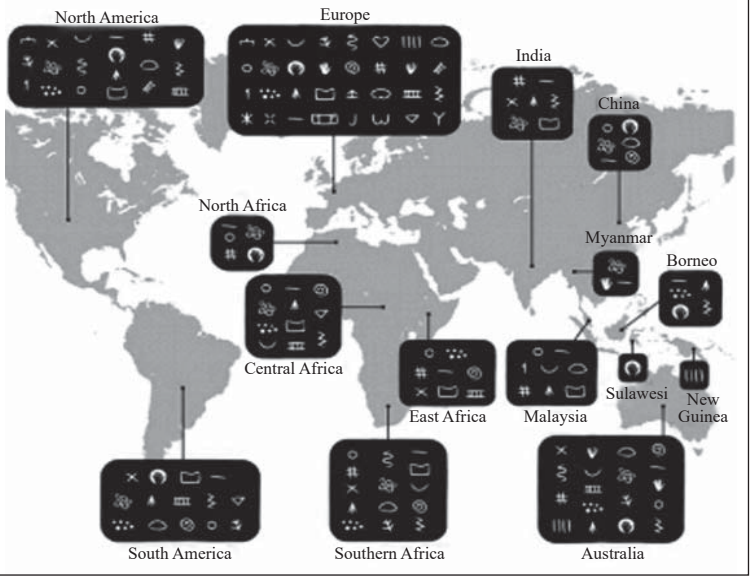

Source: Genevieve Von Petzinger, Andre Leroi - Courhan, David Lewis, Williams, Natalie Franklin

चित्र-4: *यूरोप के गुफा चित्रों में देखे गए पाषाण युग के प्रतीक, दुनिया के अन्य हिस्सों की गुफाओं में भी पाए जाते हैं। इनकी समानताएँ बताती हैं कि ये चिन्ह महज़ बेतरतीब ढंग से बनाई गई आड़ी-तिरछी रेखाएँ नहीं हैं।*

एक बार फिर खोज को आगे बढ़ाया। उन्होंने सैकड़ों की तादाद में पुरातत्वविदों, विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और पुरातत्व विभागों को खत लिखे, अपील की, निवेदन किया और उनके इलाके में मौजूद गुफा-चित्रों के नए सिरे से फोटो मंगवाकर, उनका अध्ययन किया। धीरे-धीरे उन्हें समझ आया कि अलग-अलग भौगोलिक इलाकों के गुफा-चित्रों में चिन्हों के मामले में काफी हद तक समानता है।

अमूर्त चिन्हों से भाषा तक

ऐसा माना जाता है कि ये सभी गुफा-चित्र आज से लगभग 20 से 30 हज़ार साल पहले बनाए गए थे, उस समय शिकार से खेती के बदलाव का दौर चल रहा था। इसके साथ ही नई-नई प्रथाएँ, त्यौहार इत्यादि सुनिश्चित होने की शुरुआत हो रही थी। शिकार और खेती के तरीकों से सम्बन्धित ज्ञान का संचय भी ज़्यादा-से-ज़्यादा होता चला गया। इस ज्ञान को इकट्ठा करने या सम्प्रेषित करने की ज़रूरत महसूस होने लगी थी। किसी बात को हाव-भाव से या बोलकर बताना तो सम्भव है ही, लेकिन यह तरीका तो इन्सान की मौजूदगी में ही सम्भव है। इस बातचीत को सहेजकर रखना सम्भव नहीं था। किसी बात या जानकारी को लिखित रूप में संचय किया जाना

कहीं ज़्यादा सुविधाजनक है। इस तरीके में हरेक चिन्ह किस लिए इस्तेमाल करना है, यह तय होना चाहिए और यह तय चिन्ह सबको मालूम होने चाहिए। यदि ऐसा होता है तो बिना सीधे सम्पर्क के, मैं क्या कह रहा हूँ, यह दूसरों को भी समझ में आ सकेगा।

जेनवी के रिसर्च की वजह से पुरातत्व विज्ञान में काफी उलट-पुलट हुई। ऐसा माना जाता है कि *होमो सेपियंस* अफ्रीका से निकलकर दुनिया भर में फैलते चले गए। यदि दुनियाभर के गुफा-चित्रों में साम्यता दिखाई देती है तो क्या यह माना जा सकता है कि अफ्रीका से निकलने से पहले ही इन्सान ने चिन्हों को लिखने के तरीके विकसित कर लिए थे? स्पेन में कुछ गुफाएँ काफी पुरानी यानी 64 हज़ार साल तक पुरानी हैं। इनमें उस समय निएंडरथल मानव रहता था। यदि ये निशान या चिन्ह निएंडरथल ने बनाए तो निएंडरथल मानव हमारे अभी तक के अनुमान से कहीं ज़्यादा विकसित थे। क्या *होमो सेपियंस* ने इन चिन्हों को निएंडरथल मानवों से सीखा या लिया होगा? इन सब जटिल सवालों की गहराई में न जाते हुए, हम अपने मूल विषय की ओर लौटते हैं।

सोच की शुरुआती भाषा

एक अनुमान ऐसा भी है कि गुफाओं के ये चित्र किसी घटना या प्रसंग (जैसे बड़े शिकार आदि) का चित्रण हैं। चित्र में मौजूद चौकोन, त्रिकोण निशान तो चित्रण का एक खास तरीका भर है। कुछ पुरातत्वविद मानते हैं कि त्रिकोण (▽) आकार स्त्रियों को दर्शाता है, वहीं { निशान पुरुषों के लिए इस्तेमाल होता होगा। अलबत्ता, चिन्हों के जो भी मायने निकाले जाएँ, यह बात तो तय है कि चित्रों में अमूर्त रेखागणितीय चिन्हों के साथ विचारों या जानकारी को लिखकर रखने की शुरुआत उस दौर में हो गई थी।

आज हमें यह सब आसान और सरल लग सकता है परन्तु इस बात पर गौर कीजिए कि यहाँ एक अमूर्त चिन्ह किसी एक अमूर्त बात को दर्शा रहा है। यह शायद इन्सानी बुद्धि के विकसित होने की अगली सीढ़ी थी। ये शायद सिर्फ रेखागणितीय चिन्ह न होकर, उन्हें शृंखलाबद्ध करके और उनका इस्तेमाल करके बनी सजावट यानी व्यक्त करने के एक तरीके का विकास था। अब इन्सान अमूर्त चिन्हों से अभिव्यक्ति के लिए तैयार था।

...जारी

आमोद कारखानीस: पेशे से कम्प्यूटर इंजीनियर। लेखन एवं चित्रकारी का शौक। मुम्बई में रहते हैं।

मराठी से अनुवाद: माधव केलकर: *संदर्भ* पत्रिका से सम्बद्ध हैं।

सन्दर्भ: https://www.bradshawfoundation.com/geometric_signs/index.php
https://www.hominides.com/articles/the-geometric-signs-an-introduction/